THE PRACTICE
STRATEGIC COMMUNICATIONS

PUBLICATION: BUSINESS STANDARD DATE:
EDITION: NEW DELHI (HINDI) 19/2/09

गानों के माध्यम से बनाएंगे साक्षर

सत्यव्रत मिश्र

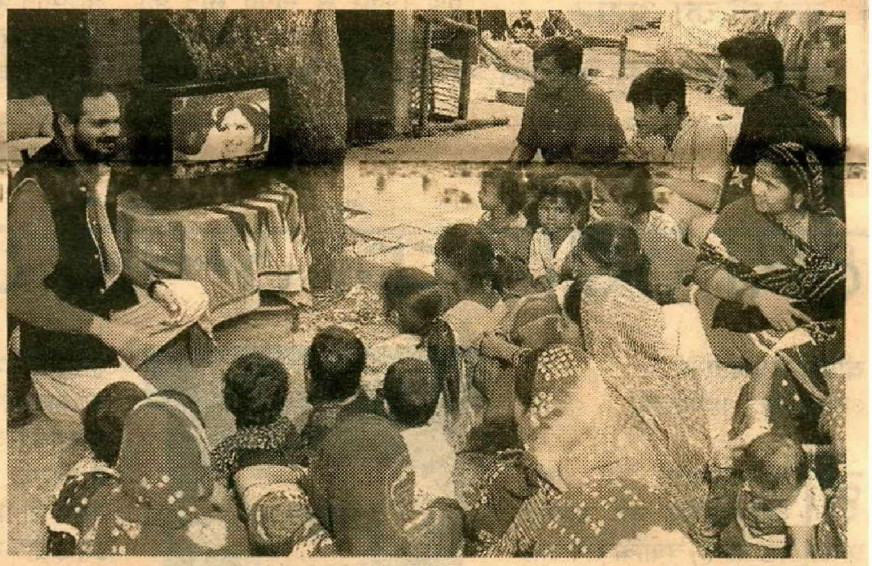

सरकारी आंकड़ों की मानें तो हमारे मुल्क में अशिक्षितों की तादाद दिनोंदिन कम हो रही है। लेकिन हकीकत कुछ और ही बयां करती है। गैर सरकारी संस्था (एनजीओ) 'प्रथम' ने कुछ दिनों पहले एक सर्वे करवाया था, जिसके तहत देश में स्कूल जाने वाले 60 फीसदी बच्चे तो अक्षरों को भी पहचानते नहीं हैं। इसलिए तो आज कई एनजीओ और संस्थान इस क्षेत्र में काफी काम कर रहे हैं। उन्हीं में से हैं आईआईएम-अहमदाबाद और प्लानेट- रीड, जो एक अलग अंदाज में साक्षरता फैला रही है।

इस संस्था का संचालन करते हैं आईआईएम, अहमदाबाद के प्रोफेसर ब्रृज कोठारी। कोठारी बताते हैं कि, 'हम साक्षरता को फैलाने के लिए गानों की सेम लैंग्वेज सब-टाइटलिंग करते है। मतलब, टीवी पर आ रहे गाने के बोल को उसी भाषा में स्क्रीन के नीचे की तरफ स्क्रॉल में दिखलाते हैं। आपको यकीन नहीं होगा, लेकिन इससे हमे लोगों को पढ़ना-लिखना सिखने में काफी मदद मिल रही है।' इस संस्था की शुरुआत हुई थी 12 साल पहले। तब आईआईएम, अहमदाबाद ने झुग्गी-झोपड़ी और ग्रामीण इलाकों में साक्षरता के बाबत एक सर्वे करवाया था। इस सर्वे का कहना था कि साक्षरता को और मजबूत बनाने की जररूत है। इसी के बाद इस संस्था का जन्म हुआ।

कोठारी बताते हैं, 'शुरू में तो हमें चार-पांच साल सिर्फ तैयारी करने में ही लग गए। जमीन पर काम तो हमने 2002 से ही शुरू किया। आज की तारीख में भारत में दो चीजों के लिए हर तबके का शख्स पागल होता है, क्रिकेट और फिल्म। जरा सोचिए, अगर इनका इस्तेमाल साक्षरता फैलाने के लिए किया जाए तो असर कितना व्यापक होगा। हमने भी यही किया। हमने शुरू में दूरदर्शन के राष्ट्रीय चैनल पर हर रविवार की सुबह आने वाले गानों के कार्यक्रम 'रंगोली' में सेम लैंग्वेज सब टाइटलिंग का प्रयोग शुरू किया। इसके नतीजे जबरदस्त निकले।'

लेकिन इसकी जरूरत क्या थी? इस बाबत कोठारी का कहना है, 'आप ही बताएं कितने लोग एक अखबार तक को ठीक से पढ़ सकते हैं या फिर नौकरी के लिए अर्जी लिख सकते हैं। हमने लोगों को 'साक्षर' तो बना दिया, लेकिन उनमें से ज्यादातर अपने नाम से ज्यादा कुछ लिख-पढ़ ही नहीं सकते हैं। इसने हमने एक मनोरंजन भरे तरीके से लोगों को कुछ सिखाने की ठानी। साथ ही, टीवी की पहुंच भी आज एक बड़े तबके तक हो चुकी है।'

> मंदी के दौर में संस्था के सामने सबसे बड़ी दिक्कत पैसे जुटाने की है। पहले शिक्षा विभाग से अनुदान मिला करता था, लेकिन अब सरकार ने उसे भी बंद कर दिया है।

ब्रृज कहते हैं, 'हमारा ज्यादा ध्यान स्कूली बच्चों की तरफ है। दरअसल, बचपन में हम जो सीखते हैं, उसका असर जिंदगी भर हम पर रहता है। हम अगर बच्चों को लिखना-पढ़ना सिखना चाहते हैं, तो इसके लिए हमें सबसे पहले लिखित शब्दों से उन्हें रूबरू करवाना पड़ेगा। जरा सोचिए, गानों का इतना असर है, तो फिल्मों में ऐसा किया जाए तो क्या होगा? वैसे, हम इसके लिए भी कोशिश कर रहे हैं।' आईआईएम, अहमदाबाद और प्लानेटरीड की यह कोशिश अब रंग भी दिखाने लगी है। इसका सबूत है एसी नीलसन और ओआरजी का 2003 और 2007 में पांच राज्यों में किया गया सर्वे। इन राज्यों में उत्तर प्रदेश, राजस्थान, बिहार और मध्य प्रदेश शामिल हैं। इस सर्वे के मुताबिक जिन बच्चों को इस अभियान में शामिल किया गया, उनमें सामान्य बच्चों के मुकाबले पढ़ने-लिखने की क्षमता में पूरे 66 फीसदी का इजाफा हुआ है।

ब्रृज के सामने आज सबसे बड़ी दिक्कत पैसे जुटाने की है। उनका कहना है, 'मंदी के इस दौर में हमारे लिए सबसे बड़ी दिक्कत की बात यह है कि सरकारी मदद हमें नहीं मिल रही है। पहले शिक्षा विभाग से हमें अनुदान मिला करता था, लेकिन अब सरकार ने उसे भी बंद कर दिया है। वैसे, कई प्राइवेट कंपनियां हमारा साथ दे रही हैं। सर रतन टाटा ट्रस्ट और महिंद्रा ट्रस्ट से भी हमें काफी मदद मिल रही है। हमें गूगल फॉन्डेशन से भी मदद मिली है। अगर देखा जाए तो इस कोशिश के माध्यम से बच्चों को शिक्षित करने पर हर बच्चे पर सिर्फ पांच पैसे प्रति वर्ष का खर्च आता है, लेकिन सरकारी अधिकारी इतना भी देने में आना-कानी करते हैं।'